रूस से वार्ता

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

13 जनवरी, 2022

नाटो द्वारा पुतिन को किसी भी यूरोपीय दुस्साहस के खिलाफ चेतावनी दी जानी चाहिए, और उनके किसी भी प्रयास को भी शांत करना चाहिए।

संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस के बीच जिनेवा वार्ता, आश्चर्यजनक रूप से, अनिर्णायक नहीं थी। शीत युद्ध के पूर्व प्रतिद्वंद्वियों के लिए पहले दौर में अपने मतभेदों को दूर करना व्यावहारिक रूप से असंभव था, जब यूरोप में विशेष रूप से यूक्रेन पर तनाव अधिक चल रहा था।

लेकिन तथ्य यह है कि दोनों शक्तियों के बीच जल्दबाजी में बातचीत हुई और वे उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन के विस्तार और रूस की सेना की लामबंदी दोनों पर चर्चा करने के लिए बातचीत जारी रखने पर सहमत हुए, यह अपने आप में एक स्वागत योग्य कदम है।

यू.एस. को वास्तव में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा मेज पर आने के लिए मजबूर किया गया था, जिन्होंने यूक्रेन के साथ रूस की सीमा पर लगभग 100,000 सैनिकों को जमा किया है।

क्रेमलिन ने पश्चिम को कई मांगें भी जारी की हैं, जिसमें पूर्वी यूरोप में नाटो के आगे विस्तार को रोकने और गठबंधन की सैन्य उपस्थिति को 1990 के स्तर पर वापस लाने की मांग की गई है। अब, गतिरोध यह है कि अमेरिका ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि वह संभावित भावी सदस्यों के लिए नाटो के दरवाजे बंद नहीं करेगा और कोई नहीं जानता कि अगर वार्ता विफल हो जाती है तो पुतिन क्या करेंगे।

नाटो के विस्तार पर चर्चा करने के लिए अमेरिका को मेज पर आने के लिए मजबूर करके – एक ऐसा मुद्दा जिसके बारे में मास्को वर्षों से शिकायत कर रहा है– पुतिन ने पहली जीत हासिल की है। लेकिन उनके लिए यह विश्वास करना मुश्किल होगा कि रूसी मांगों को पश्चिम बिना किसी प्रतिरोध के स्वीकार कर लेगा। इसलिए, दोनों पक्षों के लिए चुनौती साझा आधार तलाशने की है।

नाटो के प्रति रूस के कट्टर विरोध का स्रोत उसकी गहरी असुरक्षा है। सोवियत संघ के विघटन के बाद, काफी कमजोर रूसी संघ ने शीत युद्ध के बाद की आम सहमति के उल्लंघन के रूप में पूर्वी यूरोप में नाटो के निरंतर विस्तार को देखा।

रूस ने 2008 में सैन्य रूप से जवाब दिया जब जॉर्जिया नाटो में शामिल होने पर विचार कर रहा था, और 2014 में, कीव में रूसी समर्थक शासन के विरोध के बाद क्रीमिया को यूक्रेन से ले लिया। दूसरी ओर, पश्चिम रूस को एक आक्रामक, अपघर्षक और अस्थिर करने वाले विशाल देश के रूप में देखता है जो यूरोप को नीचे गिराता रहता है।

अंत में, नाटो के विस्तार और रूस की सैन्य प्रतिक्रिया दोनों पूर्वी यूरोप में अस्थिरता ला रहे हैं। संकट का समाधान खोजना आसान नहीं होगा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि दोनों पक्ष अपनी शीत युद्ध की मानसिकता से बाहर निकलने और द्विपक्षीय संबंधों में आपसी विश्वास पैदा करने में सक्षम हैं या नहीं। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, यूक्रेन और जॉर्जिया, दोनों अलगाववादी संघर्षों का सामना कर रहे हैं, निकट भविष्य में नाटो में शामिल नहीं हो सकते हैं। नाटो इस वास्तविकता का उपयोग रूसी चिंताओं को शांत करने के लिए एक नीतिगत वादे के रूप में कर सकता है।

दूसरी ओर, पुतिन भी मुश्किल स्थिति में हैं। रूस अभी भी अपने क्रीमिया पर कब्जा करने की आर्थिक लागतों से जूझ रहा है, जिसने यूरोप के साथ रूस के संबंधों में एक व्यापक खाई छोड़ी है।

यूक्रेन के खिलाफ आगे की आक्रामकता उसके सामरिक हितों को कमजोर कर सकती है लेकिन रूस-यूरोप संबंधों को पटरी पर लाने की किसी भी योजना के लिए घातक झटका दे सकती है। युद्ध किसी के हित में नहीं है। रूस और पश्चिम को अगले दौर की वार्ता के लिए बैठते समय इसे ध्यान में रखना चाहिए।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. निम्नलिखित में से कौन सा देश नाटो में शामिल नहीं है?

(क) यूक्रेन

(ख) बेलारूस

(ग) जॉर्जिया

(घ) उपर्युक्त सभी

Expected Question (Prelims Exams)

Q. Which of the following countries is not included in NATO?

(a) Ukraine

(b) Belarus

(c) Georgia

(d) All of the above

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. पूर्वी यूरोप में नाटो के विस्तार को लेकर रूस का रवैया पश्चिम के लिए चिंताजनक है। आपके अनुसार इस पूरे विवाद का क्या समाधान हो सकता है? चर्चा करें। (250 शब्द)

Q. Russia's attitude towards the expansion of NATO in Eastern Europe is worrying for the West. According to you, what can be the solution to this whole dispute? Discuss. (250 Words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।